❁ 24 सितम्बर 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

✺ ज्ञान-

1] मुख्य बात समझ लें कि बाप से जो राजयोग सिखाया था, वह अभी फिर से सिखा रहे हैं, वह सर्वव्यापी नहीं है। बाप इस समय आबू में विश्व में शान्ति स्थापन कर रहे हैं, उसका जड़ यादगार देलवाड़ा मन्दिर भी है। आदि देव यहाँ चैतन्य में बैठे हैं, यह चैतन्य देलवाड़ा मन्दिर है, यह बात समझ लें तो आबू की महिमा हो जाए और यहाँ भीड़ लग जाए। आबू का नाम बाला हो गया तो यहाँ बहुत आयेंगे।

2] कृष्ण की राजाई को भी स्वर्ग, बैकुण्ठ कहा जाता है।

3] भावना का भाड़ा देखो कितना मिलता है। भक्ति मार्ग में तो है अल्पकाल का सुख। यहाँ तुम बच्चे जानते हो बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। वह तो है भावना का, अल्पकाल के सुख का भाड़ा। यहाँ तुमको मिला है 21 जन्मों के लिए भावना का भाड़ा। बाकी साक्षात्कार आदि में कुछ है नहीं। कोई कहते हैं साक्षात्कार हो, तब बाबा समझ जाते हैं कुछ भी समझा नहीं है। साक्षात्कार करना है तो जाकर नौधा भक्ति करो। उससे कुछ मिलता नहीं है। करके दूसरे जन्म में कुछ अच्छा बन पड़ेंगे। अच्छा भक्त होगा तो अच्छा जन्म मिलेगा।

4] होलीहंस का अर्थ है– संकल्प, बोल और कर्म के व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन करने वाले क्योंकि व्यर्थ जैसे पत्थर होता है, पत्थर की वैल्यु नहीं, रत्न की वैल्यु होती है। होलीहंस फौरन परख लेता है कि ये काम की चीज़ नहीं है, ये काम की है।

✺ योग-

1] उस बेहद के बाप को याद करने से बेहद का वर्सा मिलता है, बस।

2] तो बाप समझाते हैं– बच्चे, एक तो अपने कल्याण के लिए अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हों। पढ़ाई की बात है।

✺ धारणा-

1] योग में भी कमी है तो ज्ञान में भी कमी है। सुनते तो हैं परन्तु धारणा नही होती है। धारणा अगर हो तो फिर औरों को भी धारणा करावें।

2] कॉन्फ्रेन्स आदि में भी चाहिए योग वाला। तलवार में जौहर नहीं होगा, किसको तीर लगेगा नहीं।

3] अब बाप समझाते हैं– यह पढ़ाई सोर्स ऑफ इनकम है, स्वयं बाप मनुष्य को देवता बनाने के लिए पढ़ाने आते हैं, इसमें पवित्र भी जरूर बनना है, दैवीगुण भी धारण करने हैं।

4] कर्म करते सिर्फ यह स्मृति इमर्ज रहे कि हम राजयोगी नॉलेजफुल आत्मायें रूलिंग और कन्ट्रोलिंग पावर वाली हैं, तो व्यर्थ जा नहीं सकता। यह स्मृति होलीहंस बना देगी।

...2

[2]

✹ **सेवा-**

1] मीठे बच्चे– यह राज़ सभी को सुनाओ कि आबू सबे बड़ा तीर्थ है, स्वयं भगवान ने यहाँ से सबकी सद्गति की है।

2] बाबा ने कहा था जहाँ बुलावा हो, वहाँ जाकर तुम समझाओ– विश्व में शान्ति कब थी ? यह आबू सबसे ऊंच ते ऊंच तीर्थ है क्योंकि यहाँ बाप विश्व की सद्गति कर रहे हैं, आबू पहाड़ी पर उनका सैम्पुल देखना हो तो चलकर देलवाड़ा मन्दिर देखो।..... तो अब तुम बच्चों को आबू की बहुत ऊंची महिमा करके समझाना चाहिए।..... बाम्बे में भी समझा सकते हो– आबू पहाड़ बड़े ते बड़ा तीर्थ है क्योंकि परमपिता परमात्मा ने आबू में आकर स्वर्ग की स्थापना की है। ..... पहले तो तुम पूछो कि विन्व में शान्ति किस प्रकार चाहते हो, कभी देखा है? विश्व में शान्ति तो इनके (लक्ष्मी-नारायण के) राज्य में थी।.....क्रिश्चियन लोग भी जानना चाहते हैं– प्राचीन भारत का राजयोग किसने सिखाया, क्या चीज़ थी? बोलो, चलो आबू में दिखायें। बैकुण्ठ भी पूरा एक्यूरेट बनाया है ऊपर छत में। तुम ऐसा नहीं बना सकते हो। तो यह अच्छी रीति बताना है। टूरिस्ट धक्का खाते हैं, वह भी आकर समझें।..... सम्मेलन आदि में निमन्त्रण देते हैं तो पूछना चाहिए– विश्व में शान्ति कब थी, वह जानते हो? विश्व में शान्ति कैसे थी– चलो हम समझायें, मॉडल्स आदि सब दिखायें। ऐसा मॉडल और कहाँ भी नहीं हैं। आबू ही सबसे बड़ा ऊंच ते ऊंच तीर्थ है, जिसमें बाप ने आकर के विश्व में शान्ति, सर्व की सद्गति की है।.... बाप रोज़-रोज़ नई बातें समझाते हैं, ऐसे-ऐसे समझाकर ले आओ।

3] बाकी यह जो मथुरा में मधुबन, कुन्ज गली आदि बैठ बनाया है, वह कुछ भी है नहीं। न कोई गोप-गोपियों का खेल है। यह समझाने में बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। एक-एक प्वाइंट अच्छी रीति बैठ समझाओ।